

---

# Savitrikritam Yama Ashtakam

——  
सावित्रीकृतं यमाष्टकम्

——  
Document Information



---

Text title : Savitrikritam Yama Ashtakam

File name : sAvitrIkRRitaMyamAShTakam.itx

Category : deities\_misc, lakShmInArAyaNIyasaMhitA, aShTaka

Location : doc\_deities\_misc

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : lakShmInArAyaNIyasaMhitA | khaNDa 1 | adhyAya 370/12-22||

Latest update : January 13, 2026

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

January 13, 2026

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Savitrikritam Yama Ashtakam

---

### सावित्रीकृतं यमाष्टकम्

---



धृत्युक्ता सा तु सावित्री यमं भक्तवरं परम् ।  
ज्ञात्वा यमाष्टकं प्राड शृणु लक्ष्मि! वदामि ते ॥ १२ ॥

सूर्यनारायणस्तौर्ध्वं पुष्करे तपसा पुरा ।  
धर्मेशं यं सुतं प्राप धर्मराजं नमाम्यहम् ॥ १३ ॥

सर्वेषां प्राणिनां कर्मभोगान्तं संविधाय यः ।  
शान्तिं करोति यो देवः शमनाय तु ते नमः ॥ १४ ॥

कृतानां कर्मणां त्वन्तं न्यायरीत्या करोति यः ।  
सर्वेषां देहिनां सोऽयं तं कृतान्तं नमाम्यहम् ॥ १५ ॥

पापिनां दण्डकर्ता यो दण्डं बिभर्ति शुद्धिदम् ।  
शास्त्रे तस्मै नीतियुजे दण्डिने ते नमो नमः ॥ १६ ॥

सर्वेषां वस्तुकार्याणां परिच्छेदं करोति यः ।  
सर्वायुःकलनं देवं कालरूपं नमाम्यहम् ॥ १७ ॥

शुवान् दण्डप्रदानैर्यो यमयत्येव सर्वथा ।  
कर्मानुरूपफलदस्तं यमं प्रणामामि वै ॥ १८ ॥

यथा कर्म तथा दाता न रागात्र य रोषतः ।  
तस्माच्छुद्धिकरं मित्रं सर्वमित्रं नमाम्यहम् ॥ १९ ॥

कृष्णनारायणभूर्तेः समुत्पन्नस्तु यः पुरा ।  
ब्रह्मणोऽशस्ततो जातस्तं ब्राह्मं प्रणामामि य ॥ २० ॥

धृत्युक्त्वा तं प्राणनाम यमस्तुष्टो बभूव ह ।  
यमाष्टकं पठतस्तु भवेन्नैव यमाह्वयम् ॥ २१ ॥

कायव्यूहेन य शुद्धिः कर्मणां तस्य जायते ।  
मुच्यते यमपाशाख्य सतीं प्राडति धर्मराट् ॥ २२ ॥

एति श्रीलक्ष्मीनारायणीयसंछितायां प्रथमे कृतयुगसन्ताने ३७०-अध्यायान्तर्गतं  
सावित्रीकृतं यमाष्टकं सम्पूर्णम् ।

लक्ष्मीनारायणीयसंछिता । अ३७१ । अध्याय ३७०/१२-२२ ॥

lakShmInArAyaNIyasaMhitA . khaNDa 1. adhyAya 370/12-22..

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Savitrikritam Yama Ashtakam*

pdf was typeset on January 13, 2026

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

